

शिष्टं न गावस्तरुणं रिक्त्ति RV. 1, 186, 7. 146, 2. 2, 33, 13. गावेव शुधे मातरा रिक्त्ते 3, 33, 1. 41, 5. 33, 13. 8, 20, 21. क्रतुं रिक्त्ति मधुनायञ्जते 9, 86, 43. 46. 97, 57. 100, 1. 7. रिक्त्तिं रिप उपस्थे यत्तः 10, 79, 3. 114, 4. शिष्टं न विप्रा मतिभी रिक्त्ति 123, 1. तयोर्द्वित्वत्पयो विप्रा रिक्त्ति धीतिभिः ablecken 1, 22, 14. AV. 5, 1, 4. Schol. zu PANĀV. Br. 6, 3, 14. रिक्, रैक्त्ति (वधे) KAVIKALPADRUMA im ÇKDr. — Vgl. श्रीळ्क und लिक्.

— intens. wiederholt belecken, küssen: रेरिक्त्, रेरिक्ते, रेरिक्काणा RV. 3, 33, 14. 1, 140, 9. 4, 38, 6. 6, 27, 7. रेरिक्ते युवति विष्पतिः सन् 10, 4, 4. तामा रेरिक्दीरुधः समञ्जन् 43, 4. यत्तः पात्रे रेरिक्ती रिशाम् AV. 11, 9, 15. पञ्चन्यो रेरिक्कामापो वीरुधः समनक्ति ÇAT. Br. 6, 7, 2. — Vgl. रेरिक्काण.

— या belecken (benagen): योनिं यो यत्तरेळ्कि RV. 10, 162, 4. — Vgl. श्रीरेक्काण.

— परि dass.: अधीवासं परि मातू रिक्वर्ह RV. 1, 140, 9.

— प्रति dass.: तं गन्धर्वस्य प्रत्याप्ता रिक्त्ति AV. 7, 73, 3.

— सम् gemeinsam belecken: वत्समिव मातरा संरिक्काणे RV. 3, 33, 3.

रिक्म् adv. wenig NAIGH. 3, 2, v. 1.

रिक्कयस् m. = स्तेन NAIGH. 3, 24.

रिक्काण s. रिक्काण.

रिक्कन् m. = रिक्कयस् NAIGH. 3, 24, v. 1. — Vgl. रिक्कन्.

1. रि Verbalwurzel s. u. 1. रि.

2. रि = रै in मधुद्री.

3. रि f. s. u. र 2) b).

रीया f. = घृणा VĀJAS. im ÇKDr. = लज्जा KALĪṅGA ebend. — Vgl. रीठा.

रीठा f. und रीठाकरञ्ज m. eine Karaṅga-Species RĪṂAN. im ÇKDr.

रीठक m. Rückgrat H. 601.

रीठा f. Geringachtung AK. 1, 1, 23. H. 1479. HALĪ. 4, 30. तपस्वि-

रीठाकारी PARÇYANĀTHAK. 5, 67. सरीठ पुनर्याक् KĀÇIKU. 76, 49 (beide Stellen bei AUFRECHT, HALĪ. Ind.). — Vgl. श्रवलीठा.

रिति (von 1. रि) f. 1) Strom; Lauf, Strich, Linie: मक्षीव रिति: शर्व-सासर्त्पथक् RV. 2, 24, 14. वार्तेवाजुषा नद्येव रितिर्त्ती इव चतुषा यात-मर्वाक् 39, 5. तामस्य रितिं पशोरिव प्रत्यन्तीकमव्यम् 5, 48, 4. दिवो वृ-ष्टिरीडो रितिर्याम् 6, 13, 1. 9, 108, 10. रीतीर्निर्वर्तयामास काञ्चनाञ्जनरा-जतो: Ströme —, Striche von Gold u. s. w. HARIV. 3931 = 3327. कनक-रितिभिः 8361. रीतीभूत in einer Reihe stehend PĀR. GRU. 3, 10. दत्ति-णोत्तररिति Schol. zu KĀTJ. ÇA. 916, 1 v. u. = स्पन्द AK. 3, 4, 22, 71. MED. I. 30 (hier fälschlich स्पन्द gedr.). = स्रवण H. an. 2, 190. = सी-मन् Grenze H. an. — 2) (Lauf der Dinge), Art, Weise; = प्रचार AK. MED. = रूप, लक्षण u. s. w. H. 1376. = गति H. an. सर्वत्रैषा विहृता रिति: Spr. 3389. इति रिति: पुरातनी Verz. d. Oxf. H. 86, a, 23. निशात्त-लिष्टचक्राङ्क रितिकृद्यो रसक्रमः KATHĪS. 14, 62. अनया रित्या auf diese Weise VER. in LĀ. (III) 2, 6. अस्मदुक्त्या रित्या SARVADARÇANAS. 102, 20. उक्तरीत्या Schol. zu P. 4, 1, 69. zu KĀP. 1, 71, 153. पूर्वाक्तरित्या NILAK. 169. वक्ष्यमाणरीत्या SĀH. D. 23, 13. — 3) Stil, Diction H. an. SĀH. D. 5. 624. fgg. 4, 14. 6, 13. fgg. PRATĀPAR. 11, a, 9. 67, a, 9. Verz. d. Oxf. H. 199, a, 4. 206, b und 207, a, No. 487. 208, a, No. 489. 210, a, 1. Es werden drei, vier und auch sechs Stile angenommen: वैदर्भी, गौडी und पाञ्चाली; dieselben und लाटिका; die vorhergehenden vier und überdies श्राव-

VI. Theil.

तिका und मागधी. — 4) Glockengut, gelbes Messing AK. 2, 9, 97. TRIK. 3, 3, 180. H. 1048. H. an. MED. HALĪ. 2, 15. KATHĪS. 24, 178. 193. RĪṂAN-TAR. 4, 203. 6, 172. 4to RĪṂAN-TAR. 12. Eisenrost TRIK. H. an. MED. = दग्ध-स्वर्णादिमल DHAR. im ÇKDr.; vgl. ब्रह्म, रीरी, रीरी, रैत्य.

रितिक 1) n. Vitriol als Kollyrium RĪṂAN. im ÇKDr. — 2) f. श्रा = रिति Glockengut, gelbes Messing VARĀH. BRH. S. 37, 8. Vitriol als Kolly-rium ÇABDAR. im ÇKDr.

रितिपुष्प n. Vitriol als Kollyrium AK. 2, 9, 103. H. 1034.

रित्यप् adj. Wasser strömend: वृष्टिगवा रित्याया Mitra und Va-ruṇa RV. 5, 68, 5. ÇAT. Br. 1, 9, 2, 6. (इन्द्रवः) वृष्टिगवा रित्यापः (voc.) RV. 9, 106, 9.

रीर m. Bein. ÇIVA'S ĠĀṬĀDH. in Verz. d. Oxf. H. 191, a, 6.

रीरी f. = रीरी, रिति Glockengut, gelbes Messing H. 1048.

रिव्, रीवति und ०ते (आदानसंवरणयोः) DUĀTUP. 24, 15, v. 1. — Vgl. चीव्.

1. रु, रीति NAIGH. 3, 14 (अर्चतिकर्मन्). DUĀTUP. 24, 24 (शब्दे) und र-

वीति P. 7, 3, 95. VOP. 9, 53. vod. रूवति, रूवत् 3. sg.; partic. रूवत् (र-

वत् MBH. 1, 6293), रवमाण (R. 7, 34, 23), रवाण (ĀCV. ÇA. 2, 18, 10); रु-

राव, रुरुविव VOP. 9, 53. रुरुविर; श्रावीत्, श्रावीषुस्, श्रवत्तः रवि-

प्यति und रविता KĀR. 1 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10. auch रोता VOP.

9, 53. brüllen; heulen, laut schreien, toben, quaken, summen, dröhnen:

रुवङ्गो: RV. 1, 173, 3. 10, 94, 6. रुवति भीमो वृषभस्तविष्याय 9, 70, 7. 71,

9, 54, 14. मा राविष्ट नेदस्तेकि तनये रविता रवत् AIT. Br. 2, 7. ते हो-

त्याप्यमाना रुरुविर 7, 27. TBA. 1, 5, 2, 9. ÇAT. Br. 2, 3, 2, 18. KĀTH. 30, 1.

PANĀV. Br. 7, 3, 11. LĀTJ. 5, 1, 14. श्रवोष्ट्रे च रुवति M. 4, 115. रासभा-

रावसदृशं रुराव च ननाद च MBH. 1, 4508. गोमायुरेष सेनाया रुवन्मध्ये

प्रधावति 4, 1463. अशिवं चारुवङ्किवा: KATHĪS. 116, 3. BHATJ. 12, 72.

14, 21. तद्वत्तः — रवत्तं भैरवं रवम् MBH. 1, 6293. रुवत्तश्च मकरवान् (रा-

तसाः) 3, 11716. R. 4, 9, 64. 7, 7, 41. 34, 23. उद्भापति रीति नृत्यति BĀṬG.

P. 7, 7, 34. इत्यैरिज्जनः 4, 13, 40. BHATJ. 3, 17. न खल्वकुमिदं प्रूये रीमि

किं न प्रणोपि मे MBH. 1, 3022. शिखी रीति त्रिमात्रम् ÇIKSHĪ 49. रीति

कुक्कुटः VARĀH. BRH. S. 63, 1. 86, 62. 88, 34. 89, 4. 90, 13 (रुवती). 91, 1.

93, 16. 20. 96, 5. fgg. एते रुवन्ति मधुरं सारसा जलचारिणाः MBH. 1, 5898.

मण्डूकेषु रुवत्सु 12, 5400. रुवन्ति रावान्मधुरान्पट्टाः 1, 2855. कर्णे कलं

किमपि रीति शनैर्विचित्रम् (मशकः, खलः) Spr. 1884. mit Geschrei u. s.

w. erfüllen, das Geschrei richten gegen: पुंस्कोकिलरुताः (नद्यः) MBH.

3, 1535. सर्वपतिरुतं वनम् HARIV. 3343. R. 3, 7, 3. 4, 41, 11. विद्वग्मगुरु-

ता (संध्या) VARĀH. BRH. S. 30, 7. 34, 8. 39, 1. 86, 72. KĀM. NĪTIS. 16, 25.

रुत n. Gebrüll, Geschrei, Gesang (der Vögel) u. s. w. AK. 1, 1, 6, 4. H.

1407. रुते रुहति KĀTJ. ÇA. 5, 6, 38. गोमायुरुतानि Spr. 1844. कुब्जा

रुतेर्गुहमनादयत् R. 2, 78, 12. SUÇA. 2, 281, 19. वसते शीतभीतेन को-

किलेन वने रुतम् । अतर्जनगताः पद्माः श्रोतुकामा श्रोत्यतिताः ॥ Spr.

2739. पुंस्कोकिलानाम् ÇĀK. 131. परपुष्टं MBH. 4, 386. R. GORR. 2, 56.

13. विज्ञेयसारसाः 3, 22, 23. द्विज्ञानाम् 2, 98, 16. BRAHMA-P. in LĀ. (III)

51, 15. रुतं SUÇA. 1, 107, 11. RĪ. 1, 5. VARĀH. BRH. S. 3, 39. 47, 28. 86, 6.

41. fg. 88, 10. 26. 34. 37. 89, 15. Verz. d. B. H. H. No. 896. fg. रुतानि

षट्पदानाम् BHATJ. 2, 10. ÇIC. 9, 34. रुतज्ञः सर्वसत्त्वानाम् so v. a. die Sprache

aller Thiere kennend MBH. 12, 4269. 13, 5204. HARIV. 1234. R. 2, 33, 17.

रुत्तिरुताभिश्च KATHĪS. 13, 17. रुतज्ञा अपि पत्तिषाम् 101, 49. विद्यो च